दिल तू रो ले,
पर कभी टूटना मत



लेखनः ग्लैन रिंगट्वैथ, चित्रः शार्लेट पार्दी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

‘क्राय, हार्ट, बट नेवर ब्रेक’ एक अद्‌भुत किताब है। मैं हमारे शोक की तुलना अक्सर केक के घोल में नमक डालने से करती हूँ - जो मिठास को उभारता है। प्रेम और किसीको खो देना आपस में गुंथे हुए होते हैं - हम एक को समझे बिना दूसरे को जान नहीं पाते।

जेड ब्लेक, न्यू मैक्सिको ग्रीफ सेंटर

“समृद्‌ध व प्रभावी”

-न्यू यॉर्क टाइम्स

“मृत्यु का अर्थ समझने के लिए अब यह चतुर व कल्पनाशील बाल पुस्तक आई है - यह एक अनमोल रत्न है।

- ब्रेन पिकिंग्स

यह जिन्हें हम प्यार करते हैं, उनको अलविदा कहना सीखने की कथा है। *‘क्राय, हार्ट, बट नेवर ब्रेक’* हमें दिखाती है कि मृत्यु जीवन का वह स्वाभाविक हिस्सा है - जो आवश्यक भी है और अपरिहार्य भी।



मेरी माँ, लोन रिंगट्वैथ मैडसन की स्नेह स्मृति में

डैनिश से अनुवादः रॉबर्ट मोउलथ्रॉप

दिल तू रो ले,
पर कभी टूटना मत

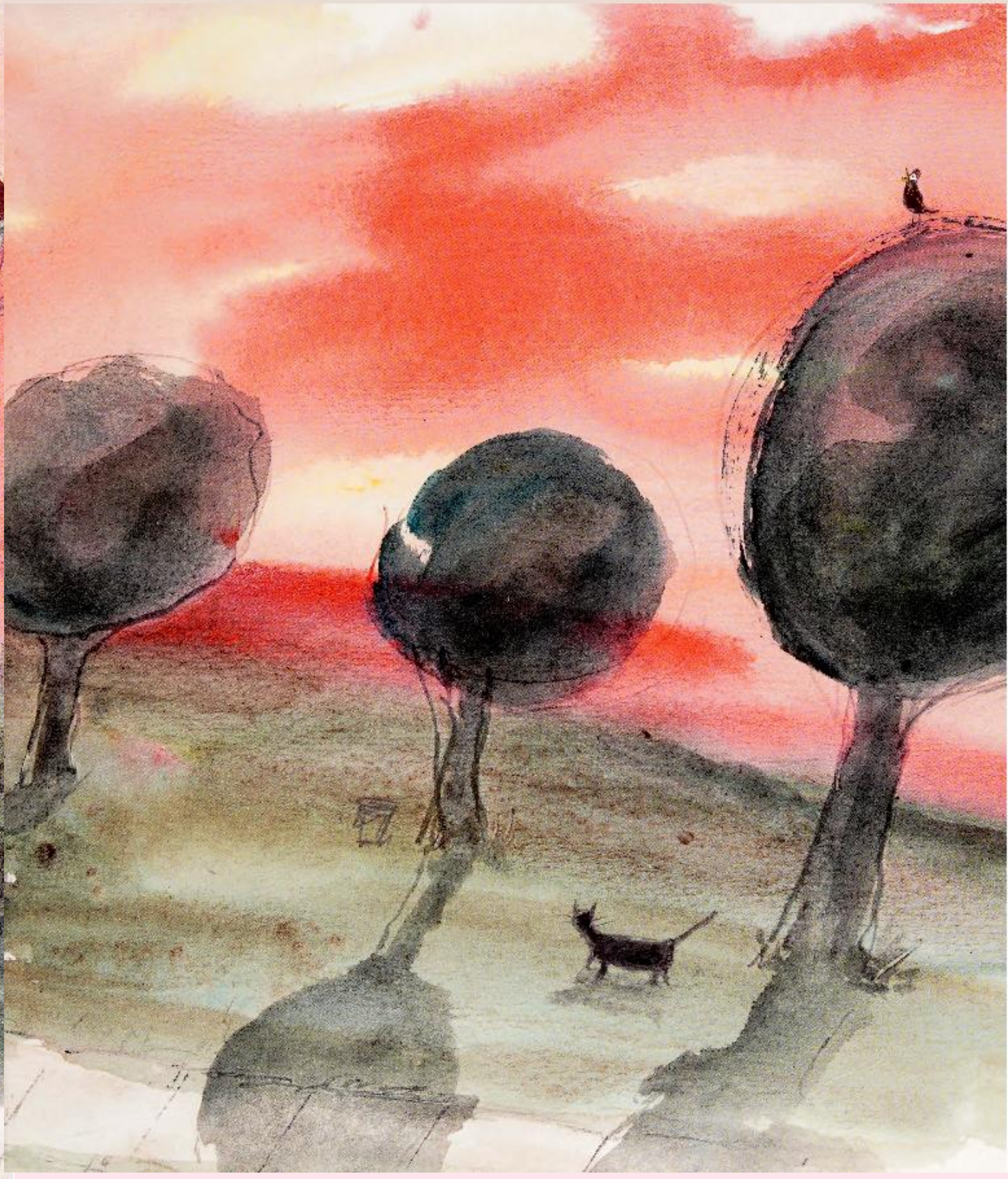


लेखनः ग्लैन रिंगट्वैथ, चित्रः शार्लेट पार्दी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



सुदूर उत्तर में एक छोटा-सा आरामदेह घर है।
उसमें चार बच्चे अपनी चहेती दादी के साथ रहते थे।
दादी एक नेकदिल महिला थी, उसने कई सालों उनकी देखभाल की थी।
अब दादी से मिलने कोई आया था।



बच्चे डर न जाएं,

इसलिए उस आगंतुक ने अपना हंसिया दरवाज़े के बाहर ही छोड़ दिया था।

इसके बावजूद बच्चों को पता था कि वह आगंतुक मौत था।

नैल्स जो सबसे बड़ा था और उसकी बहन सोनिया

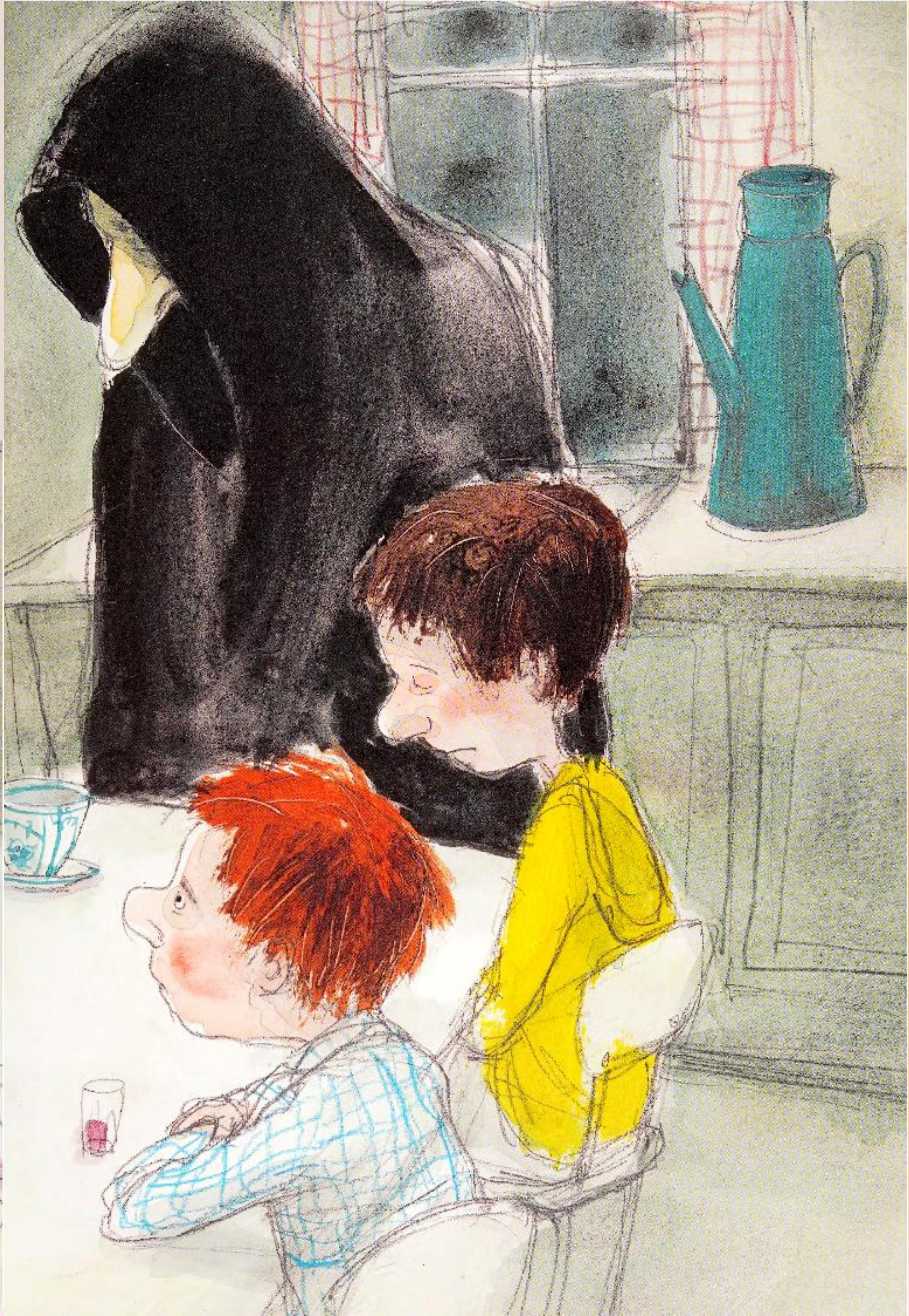
ने अपनी दुख से भारी आँखें मूंद लीं।

कैस्पर ने, जो उनसे छोटा था, आगन्तुक की अनदेखी करने की कोशिश की।

पर लीआ जो सबसे छोटी और हमेशा

मुसीबतों में फंसती थी, सीधे मौत को घूरने लगी।





उस पसरी खामोशी में बच्चे अपनी दादी को साँस लेते सुन पा रहे थे। दादी की घरघराहट भरी साँसें ठीक वैसी थीं, जैसी मेज़ पर बैठे आगन्तुक की। वे जानते थे कि वह दादी को लिवा लेने आया है, और वक़्त कम ही बचा है।







क्योंकि यह तो सब जानते हैं कि मौत की इकलौती दोस्त रात है, बच्चों ने तुरत-फुरत एक योजना बना डाली। वे मौत को रात भर कॉफी पिलाएंगे और दादी से दूर रखेंगे। इससे भोर हाने पर उसे दादी के बिना ही लौटना पड़ेगा।

सो हर बार मौत की कॉफी का प्याला खाली होते ही
नैल्स पूछता "और कॉफी, जनाब?"
और मौत हामी में सिर हिलाता।
मौत को अपनी कॉफी कड़क और बिना दूध के पसन्द थी
और वह बैठ कर कुछ देर सुस्ताने का मौका पा खुश था।



समय गुज़रा।

अंततः वह तैयार था। उसने अपना हड्डीदार हाथ प्याले पर धरा व "और नहीं" का इशारा किया।

तब लीआ ने, जो पूरी रात मौत को देखती रही थी, आगे बढ़ मौत का हाथ थामा।

"ओह मौत," उसने कहा, "हमारी दादी हमें बेहद प्यारी है, उसे मरना क्यों पड़ रहा है?"

कुछ लोग कहते हैं कि कि मौत का दिल ही मर चुका है और कोयले के ढ़ेले-सा काला है। पर यह सच नहीं है। उसके स्याह चोंगे के नीचे उसका दिल सबसे खूबसूरत सूर्यास्त-सा लाल है और जीवन के असीम प्रेम से धड़कता है।





मौत बात समझने में बच्चों की मदद करना चाहता था। सो उसने कहा,

“मैं तुम लोगों को एक कहानी सुनाना चाहता हूँ।”

और उसने एक मज़बूत मीठी आवाज़ में बोलना शुरू किया।

“एक समय की बात है, इतने पुराने ज़माने की, कि वह सिर्फ मुझे ही याद है। दो भाई रहते थे। एक का नाम था दुखः और दूसरे का शोक। ग़मगीन और उदास वे अपनी वादी में ऊपर नीचे घूमा करते थे। वे बड़े आहिस्ता और भारी कदमों से चलते थे। क्योंकि वे कभी नज़रें उठा ऊपर देखते नहीं थे, उन्होंने पहाड़ी के ऊपर की परछाइयों के परे कभी झांका ही नहीं था।



''उन पहाड़ियों के ऊपर दो बहनें रहती थीं, खुशी और आनन्द। वे जगमग और धूपदार थीं और उनका हरेक दिन प्रसन्नता से भरा होता था। बस एक ही परछाईं उनके इस अहसास का कारण थी कि कहीं कुछ कमी है। वे यह जानती ही नहीं थी उन्हें दरअसल कमी किस चीज़ की है। पर उन्हें यह ज़रूर लगता था वे अपनी प्रसन्नता का पूरा मज़ा नहीं ले पाती है।''

मौत ने लीआ को सहमति में सिर हिलाते देखा,

''मुझे लगता है कि तुम अंदाज़ लगा सकते हो कि आगे क्या हुआ।''





''तब एक दिन दोनों भाइयों और दोनों बहनों की मुलाकात हुई। दुःख फौरन खुशी के प्रेम में पड़ गया और खुशी भी उससे प्यार करने लगी। यही शोक और आनन्द के साथ भी हुआ। वे एक-दूसरे के बिना जी ही नहीं सकते थे।''



“इस दोहरी शादी और भारी जलसे के बाद दोनों जोड़े पहाड़ी के आधे नीचे और आधे ऊपर, अगल-बगल बने दो घरों में रहने लगे। इस तरह दोनों घरों के दरमियान बराबर की दूरी थी।”

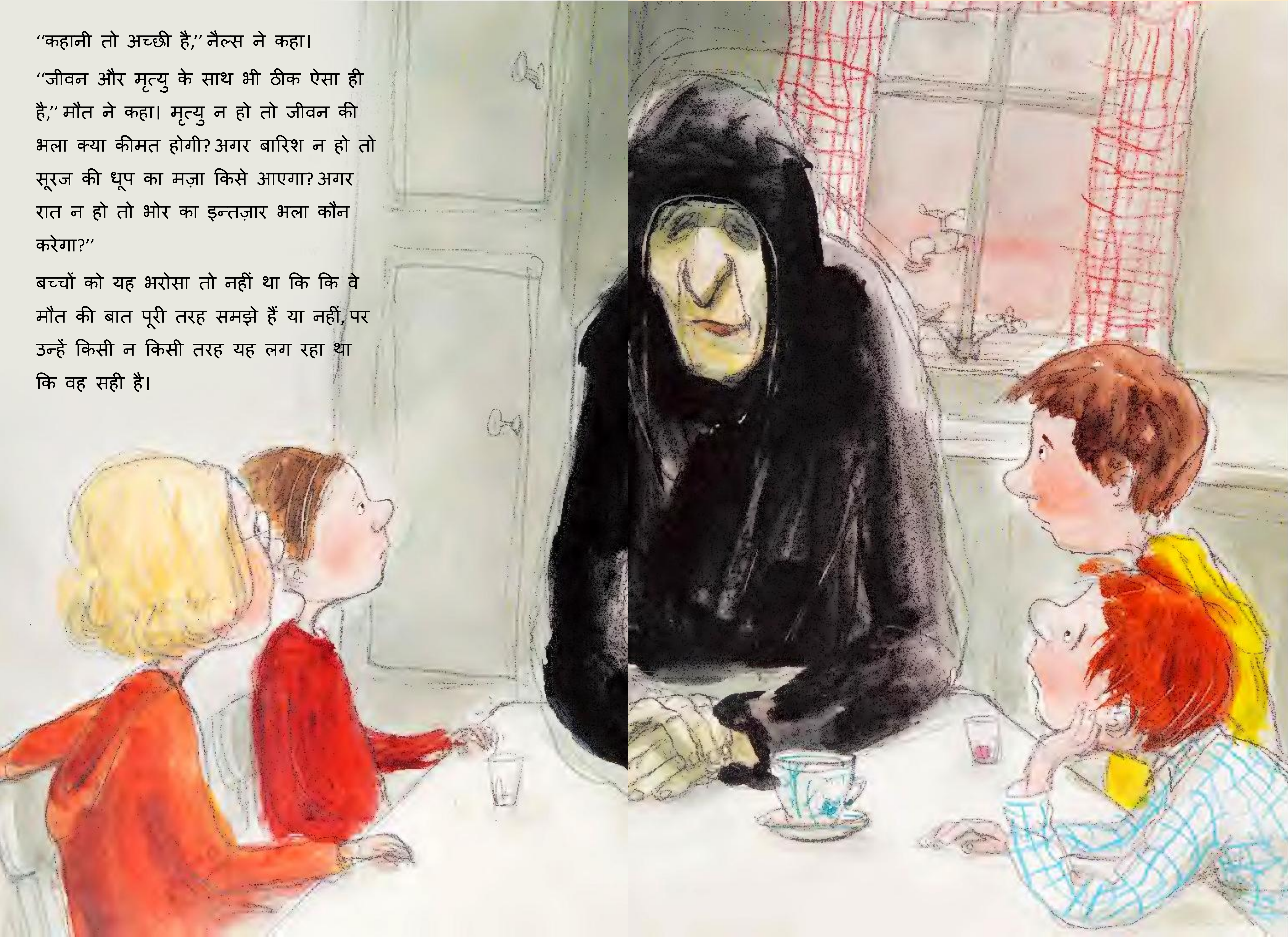
“दोनों जोड़े उम्रदराज़ होने तक जिए। जब मरने का दिन आया शोक ओर आनन्द एक ही दिन मरे। दुःख और खुशी भी। क्योंकि उनके साथ-साथ होने की प्रसन्नता इतनी थी कि वे एक-दूसरे के बिना जी ही नहीं सकते थे।”



''कहानी तो अच्छी है,'' नैल्स ने कहा।

''जीवन और मृत्यु के साथ भी ठीक ऐसा ही है,'' मौत ने कहा। मृत्यु न हो तो जीवन की भला क्या कीमत होगी? अगर बारिश न हो तो सूरज की धूप का मज़ा किसे आएगा? अगर रात न हो तो भोर का इन्तज़ार भला कौन करेगा?''

बच्चों को यह भरोसा तो नहीं था कि कि वे मौत की बात पूरी तरह समझे हैं या नहीं, पर उन्हें किसी न किसी तरह यह लग रहा था कि वह सही है।



आख़िरकार मौत उठा। ऊपर जाने का समय हो चुका था।

एक हल्की सुरमई रेखा रात को धकेल रही थी।

कैस्पर मौत को रोकना चाहता था, पर नैल्स ने उसे राका।

''नहीं,'' नैल्स ने कहा। ''ज़िन्दगी आगे बढ़ रही है। यह तो ऐसे ही होना चाहिए।''

कुछ ही पलों बाद बच्चों ने ऊपर की खिड़की को खुलते सुना।

तब एक ऐसी आवाज़ में, जो रोने और फुसफुसाहट के कहीं बीच थी,

मौत ने कहा, ''उड़ो आत्मा, उड़ कर चली जाओ।''





बच्चे हड़बड़ाते ऊपर गए।

वे दबे पाँव दादी के कमरे में घुसे।

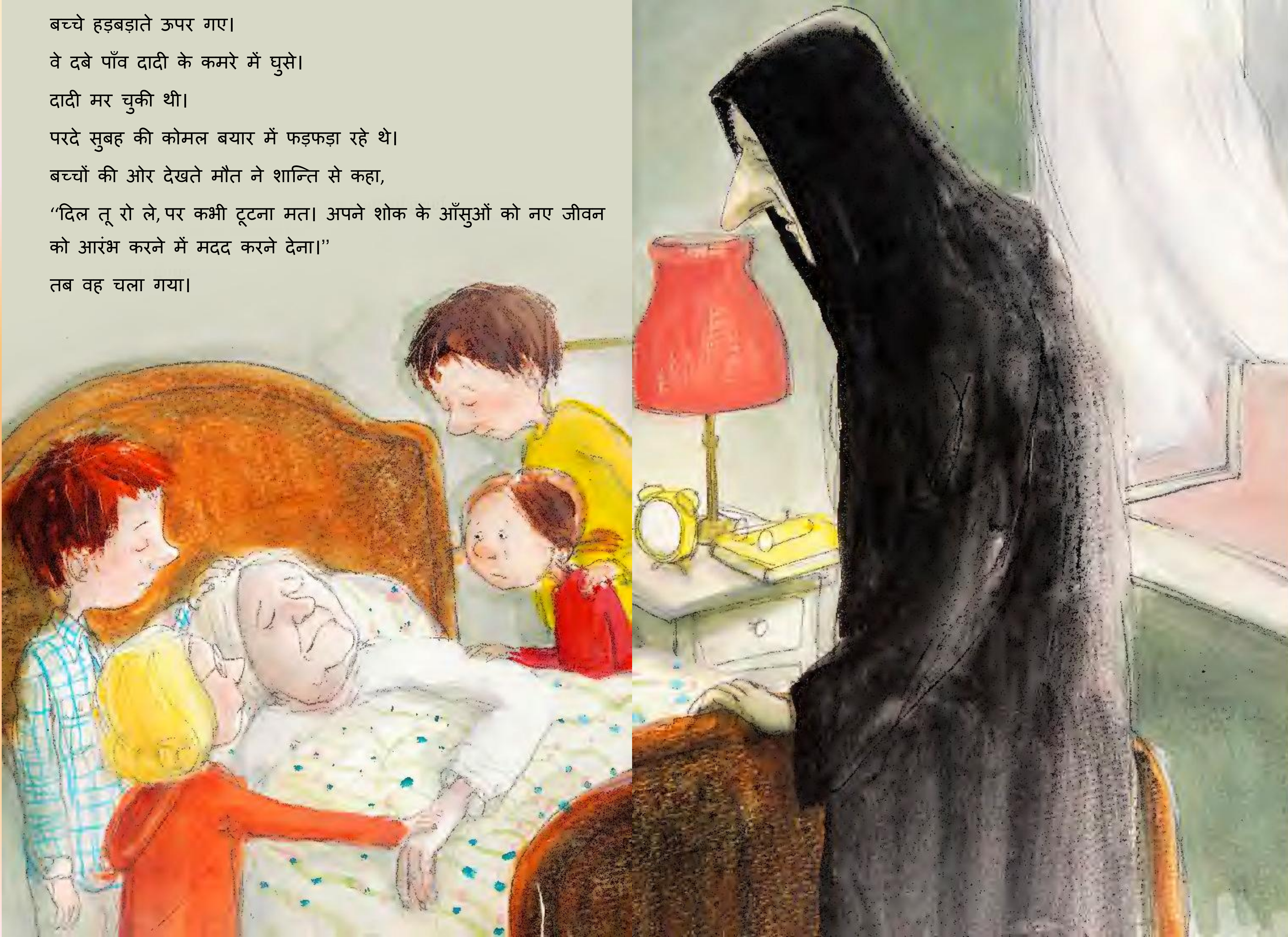
दादी मर चुकी थी।

परदे सुबह की कोमल बयार में फड़फड़ा रहे थे।

बच्चों की ओर देखते मौत ने शान्ति से कहा,

“दिल तू रो ले, पर कभी टूटना मत। अपने शोक के आँसुओं को नए जीवन को आरंभ करने में मदद करने देना।”

तब वह चला गया।





इसके बाद बच्चे जब भी दादी के कमरे के खिड़की खोलते, वे दादी के बारे में सोचते। और जब कभी हवा उनके चेहरों को सहलाती, वे दादी का स्पर्श महसूस करते।





आगे आने वाले वर्षों में बच्चे प्रसन्नता और शोक, दोनों के साथ रहते रहे, पर मौत के शब्द उन्हें हमेशा याद रहे। उनके दिलों को उन शब्दों से सुकून मिलता रहा। उनके दिल शोक मनाते और रोते ज़रूर थे, पर वे कभी टूटे नहीं।







ग्लैन रिंगट्वैथ विख्यात व पुरस्कृत डेनिश बाल पुस्तकों के लेखक हैं। उन्होंने बच्चों व किशोरों के लिए 40 से अधिक पुस्तकों की रचना की है। उनकी पुस्तकों के कई भाषाओं में अनुवाद हुए हैं। वे उत्तरी डेनमार्क में रहते हैं।

शार्लेट पार्दी चहेती डेनिश चित्रकार हैं जिन्होंने सन् 2000 में प्रकाशित पहली पुस्तक के बाद कई पुस्तकों को चित्र दिए। वे जल व एक्रैलिक रंगों के मिश्रित मीडिया तकनीक का उपयोग करती हैं। इस पुस्तक *'क्राय, हार्ट, बट नेवर ब्रेक'* के चित्र 2003 में आयोजित बोलोग्ना पुस्तक मेले में प्रदर्शित किए गए थे। वे उत्तरी कोपनहैगन में एक बड़े जंगल के पास रहती हैं।

रॉबर्ट मोउलथ्रॉप पुरस्कृत नाटककार हैं जो न्यू यॉर्क शहर में रहते और काम करते हैं। उनके रचे दो लघु कथा संकलन प्रशंसित रहे हैं। बच्चों के लिए लिखा उनका नाटक *जैक द प्रिंस ऑफ आयरलैण्ड* का मंचन सबसे पहले मैनहैटन चिल्ड्रन्स थियेटर में किया गया था।

